A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन तथा वादन का पारस्परिक सम्बन्ध

Dr Kamini Shandil
Assistant Professor Music (Instrumental), Rajiv Gandhi Govt.College Chaura Maidan Shimla

OPEN ACCESS

सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत की संरचना मूलतः कंठसंगीत पर आधारित रही है, किन्तु वाद्यसंगीत ने उसके सौन्दर्य, विस्तार और अभिव्यक्ति को समृद्ध एवं व्यापक बनाया है। प्रस्तुत शोधपत्र में गायन एवं वादन के तात्त्विक, ऐतिहासिक तथा शैलीगत अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है। वैदिक काल से आधुनिक युग तक दोनों के पारस्परिक प्रभाव, घराना-परम्परा, गत-शैली, मसीतखानी एवं रज़ाखानी बाज, ध्रुपद एवं ख्याल गायकी के प्रभाव तथा तन्त्रीवाद्यों की विकास-यात्रा का विवेचन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कंठसंगीत और वाद्यसंगीत परस्पर पूरक, अन्योन्याश्रित तथा अभिव्यक्ति के दो समन्वित आयाम हैं। भारतीय संगीत की समग्रता इन्हीं के संतुलित सामंजस्य में निहित है।

मुख्य शब्द: कंठसंगीत, वाद्यसंगीत, गत, मसीतखानी बाज, रज़ाखानी बाज, ध्रुपद, ख्याल, तन्त्रीवाद्य, घराना-परम्परा

प्रस्तावना

भारतीय संगीत मुख्यतः गायन पर आधारित है। वैदिक काल से ही मंत्रोच्चारण एवं सामगान के माध्यम से कंठसंगीत की परम्परा विकसित हुई। यद्यपि गायन की प्रधानता रही, तथापि वाद्यों का समुचित प्रयोग भी समानांतर रूप से होता रहा। भारतीय संगीत का मूलाधार कंठ है, अतः वे वाद्य अधिक प्रतिष्ठित हुए जिनकी ध्वनि मानव कण्ठ से साम्य रखती है।

संगीतज्ञ अपनी भावाभिव्यक्ति गायन या वादन दोनों माध्यमों से करता है। वस्तुतः गायन और वादन एक-दूसरे के पारस्परिक प्रतिविम्ब हैं। संगीत अभिव्यक्ति का ऐसा माध्यम है जिसमें अन्तर्निहित प्रेरणाएँ कलाकार को सृजन और विकास की ओर अग्रसर करती हैं। संगीत का सौन्दर्य एवं आनन्द गायन-वादन की पारस्परिकता में निहित है। प्राचीन ग्रंथों में भी दोनों के तत्त्वों का समन्वित विवेचन प्राप्त होता है।

कंठसंगीत और वाद्य संगीत का तात्त्विक अन्तःसम्बन्ध अत्यन्त गहन है। श्रुति, स्वर, ग्राम, मूर्छना, अलंकार, आलाप, तान, ताल तथा लय, ये सभी तत्त्व दोनों में समान रूप से विद्यमान हैं। सामान्य अवस्था में दोनों स्वतंत्र प्रतीत होते हैं, परन्तु विकास की अवस्था में इनका परस्पर प्रभाव अधिक स्पष्ट हो जाता है। प्रभाव एवं कलात्मक उत्कृष्टता की दृष्टि से दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध अत्यावश्यक है। दोनों की अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न अवश्य हैं, परन्तु उनकी अन्तर्निहित तात्त्विक संरचना समान है। अतः दोनों का सम्बन्ध प्रतिस्पर्धी न होकर पूरक एवं समन्वित है।

किसी भी गायक या वादक में दोनों की संभावनाएँ विद्यमान रहती हैं। वाद्य-संगीत के प्रस्तुतीकरण के समय भी कंठसंगीत प्रत्यक्ष न होकर मानसिक रूप से साथ चलता है। इस प्रकार गायन और वादन का सम्बन्ध केवल व्यावहारिक ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक भी है।

संगीत के अंतर्गत गायन और वादन दोनों का समान महत्त्व है। इन्हें संगीतरूपी रथ के दो पहियों की उपमा दी जा सकती है। तथापि परम्परागत मान्यता में गायन को सर्वोच्च, तत्पश्चात् वादन तथा अन्त में नृत्य को स्थान दिया गया है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

वैदिक एवं प्राचीन काल

वैदिक सामगान में स्वर-संरचना का प्रारम्भिक रूप मिलता है। सामवेद में मंत्रों का गायन और वीणा के प्रयोग के प्रमाण मिलते हैं। तत्पश्चात् नाट्यशास्त्र एवं संगीतरत्नाकर जैसे ग्रन्थों में गायन एवं वादन के तत्त्वों का सुविस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। उस काल में वाद्य, गायन की अभिव्यक्ति को विस्तार देने का साधन थे। वीणा जैसे तन्त्रीवाद्य कंठसंगीत की अभिव्यक्ति को विस्तार देने वाले साधन बने।

मध्यकाल एवं सेनिया परम्परा

मध्यकाल में तानसेन का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। वे उच्चकोटि के गायक थे, परन्तु उनके वंशजों ने तन्त्रीवाद्यों के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तानसेन के काल में गायन और वादन का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ था। तानसेन स्वयं उच्च कोटि के गायक थे, किन्तु उनकी परम्परा में तन्त्रीवादन को विशेष उन्नति मिली। उनके वंशज 'सेनिया' कहलाए, जिन्होंने बीन एवं रबाब जैसे वाद्यों को दरबारी गरिमा प्रदान की।

उस समय प्रत्येक वादक के लिए ध्रुपद गायन का ज्ञान अनिवार्य था, क्योंकि वाद्य पर राग-विस्तार हेतु ध्रुपद की संरचना का बोध आवश्यक माना जाता था।वीणा या रबाब पर राग का पूर्ण आलाप प्रस्तुत करने हेतु ध्रुपद की बंदिशों—जैसे स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग का अभ्यास आवश्यक माना जाता था। इस प्रकार गायन वादन का आधारभूत प्रशिक्षण था। इससे स्पष्ट है कि वादन की शिक्षा गायन से पृथक नहीं थी।

गायन-वादन की तात्त्विक समानताएँ

गायन और वादन दोनों में निम्न तत्त्व समान रूप से विद्यमान हैं—

- श्रुति एवं स्वर-सिद्धान्त
- राग की संरचना
- आलाप, तान, मींड, गमक
- ताल एवं लय-व्यवस्था
- भावाभिव्यक्ति

यद्यपि गले और वाद्य की सीमाएँ भिन्न हैं, तथापि दोनों की अभिव्यक्ति का मूल स्रोत एक ही है—रागात्मक चेतना। वाद्य संगीत को कंठसंगीत का 'मुखरित रूप' कहा जा सकता है।

गत-शैली और तन्त्रीवादन

गत का स्वरूप उत्तर भारतीय संगीत में तन्त्रीवादन की दो प्रमुख शैलियाँ प्रचलित हैं गत एवं गायकी अंग। 'गत' शब्द 'गति' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है चाल, मार्ग या प्रवाह। गत छन्दबद्ध रचना है जिसमें लयात्मक प्रवाह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गुरु, लघु तथा द्रुत मात्राओं के आधार पर इसका स्वरूप निर्धारित होता है, जिससे ताल की खण्डात्मक एवं लयात्मक संरचना का बोध होता है।

तन्त्री वाद्यों जैसे सितार, सरोद और वीणा में गत शैली का विशेष महत्त्व है। यद्यपि गायकी अंग का प्रभाव इन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, तथापि गत-वादन का अपना पृथक् अस्तित्व भी है। इसकी परम्परा प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित है।

मसीतखानी एवं रज़ाखानी बाज

18वीं शताब्दी में तन्त्रीवादन की दो प्रमुख शैलियाँ विकसित हुईं—मसीतखानी (विलम्बित) एवं रज़ाखानी (द्रुत)।

- मसीतखानी बाज – यह प्रायः विलम्बित लय में प्रस्तुत की जाती है। इसकी बढ़त मिज़राब के विशेष छंदों पर आधारित होती है। इसमें ताल की स्पष्ट संरचना दिखाई देती है।

- रज़ाखानी बाज – रज़ाखानी शैली में मध्यलय एवं द्रुत लय का प्रयोग अधिक मिलता है। इस पर ठुमरी एवं ख्याल गायकी का प्रभाव स्पष्ट है। अनेक रज़ाखानी गतें तत्कालीन बंदिशों एवं ठुमरियों पर आधारित थीं।

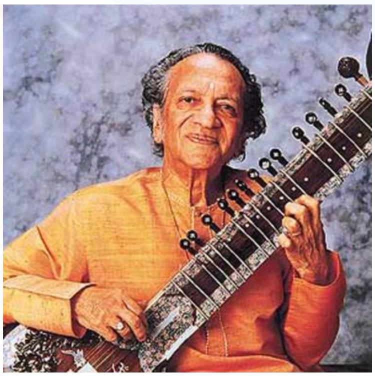

A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ध्रुपद, ख्याल और ठुमरी का प्रभाव

ध्रुपद का प्रभाव

ध्रुपद भारतीय संगीत की प्राचीन एवं गम्भीर शैली है। वादन की प्रारम्भिक आलाप-शैली आज भी ध्रुपद के 'नोम-तोम' आलाप पर आधारित है। जिस क्रम से ध्रुपद में राग-विस्तार किया जाता है, उसी क्रम से सितार या सरोद में भी आलाप प्रस्तुत किया जाता है। स्थायी, अन्तरा, संचारी एवं आभोग की संरचना का प्रभाव वादन के आलाप-क्रम में स्पष्ट दिखाई देता है।

ख्याल का प्रभाव

आधुनिक काल में तन्त्रीवाद्यों की शैली पर विशेष रूप से ख्याल गायकी का प्रभाव पड़ा है। मींड, कण, मुर्की, कृत्तन, घसीट आदि अलंकारों की सजीव अभिव्यक्ति अब वाद्यों में संभव हो सकी है। ख्याल के विकास के साथ वादन-शैली में लचीलापन, तानों की विविधता एवं कल्पनात्मक विस्तार बढ़ा। विशेषतः सितार एवं सरोद जैसे वाद्यों में ख्याल की तानकारी, बोल-तान एवं सरगम के प्रयोग का प्रभाव स्पष्ट है।

ठुमरी का प्रभाव

गुलाम रज़ा द्वारा विकसित रज़ाखानी शैली पर तत्कालीन ठुमरी गायकी का गहरा प्रभाव था। अवध दरबार में प्रचलित भैरवी, खमाज, काफी आदि रागों की ठुमरियों की धुनों पर आधारित अनेक रज़ाखानी गतें लोकप्रिय हुईं। इन शैलियों में राग-विस्तार, बंदिश, लयबद्धता तथा भाव-प्रदर्शन की पद्धति पर गायकी का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। विशेषतः ख्याल और ठुमरी गायकी ने तन्त्रीवाद्यों की शैली को समृद्ध किया है। मींड, कण, मुर्की, गमक आदि अलंकारों की अभिव्यक्ति आज वाद्यों में उसी प्रकार संभव है जैसे गायन में।

समकालीन दृष्टिकोण

गायन एवं वादन के घरानों में पारस्परिक आदान-प्रदान समयानुसार परिवर्तित होता रहा। आधुनिक युग में गायक और वादक दोनों एक-दूसरे की विशेषताओं को आत्मसात कर रहे हैं। सितार, सरोद और वीणा जैसे वाद्यों में गायकी अंग का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इसी प्रकार कई गायक वाद्य-शैली की जटिलताओं को अपनाकर अपने गायन को समृद्ध कर रहे हैं।

आज कलाकार किसी एक परम्परा तक सीमित नहीं रहना चाहते; वे गान और वादन दोनों की श्रेष्ठताओं को आत्मसात् कर समन्वित शैली का निर्माण कर रहे हैं।

इस प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन दो स्वतंत्र किन्तु पूरक धाराएँ हैं।

तात्त्विक विश्लेषण

1. अन्योन्याश्रितता – वादन का मूलाधार गायकी की बंदिशें एवं राग-विस्तार है।

2. सीमाएँ एवं संभावनाएँ – गले की सूक्ष्म श्रुति-अभिव्यक्ति वाद्य पर सीमित हो सकती है, वहीं वाद्य की द्रुत तानें गले पर कठिन हो सकती हैं।

3. अभिव्यक्ति की एकता – दोनों का लक्ष्य राग-भाव की अभिव्यक्ति है।

वाद्य संगीत कंठसंगीत से भिन्न न होकर उसका मुखरित, विस्तृत एवं अनुगामी रूप है।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन का सम्बन्ध अत्यन्त गहन एवं ऐतिहासिक है। गायन और वादन भारतीय संगीत के दो स्वतंत्र किन्तु समन्वित आयाम हैं। दोनों एक-दूसरे के सहायक, प्रेरक तथा पूरक हैं। ऐतिहासिक विकास, घराना-परम्परा, गत-शैली तथा आधुनिक प्रवृत्तियों के अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि दोनों के बिना संगीत की पूर्णता सम्भव नहीं।

भारतीय संगीत की पूर्णता और सौन्दर्य इन्हीं के संतुलित सामंजस्य में निहित है। भविष्य में भी संगीत का विकास इसी पारस्परिक संवाद, आदान-प्रदान और नवोन्मेष के आधार पर होता रहेगा। इनका पारस्परिक सम्बन्ध ही संगीत की पूर्णता का आधार है।

सन्दर्भ सूची

1. मिश्र, लालमणि. (1973). भारतीय संगीत वाद्य भारतीय संगीत वाद्य', भारतीय ज्ञानपीठ पृष्ठ- 144
2. मिश्रा, अरूण. (2018). भारतीय कंठ संगीत और वाद्य संगीत. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली
3. बसु, डॉ० पुष्पा. (फरवरी-मार्च- 1984). तन्त्री वाद्यों की वादन शैली और गायन से उसका सम्बन्ध. संगीत कला विहार. पृष्ठ-37
3. बसु, डॉ० पुष्पा. (फरवरी-मार्च- 1984). तन्त्री वाद्यों की वादन शैली और गायन से उसका सम्बन्ध. संगीत कला विहार. पृष्ठ-38
4. देवांगन, तुलसीराम. "हिन्दुस्तानी संगीत में तन्तुवाद्य: बेला और गायकी. पृष्ठ- 76

https://www.facebook.com/photo.php?fbid=2094145071420978&set=pb.100024765165525.-2207520000&type=3
https://serenademagazine.com/content/images/size/w2000/wp-content/uploads/2023/04/kishori_amankar.jpg
https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Fwww.thetalentedindian.com%2Fgirija-devi-the-queen-and-stalwart-of-thumri%2F&psig=AOvVaw2yHApzCk_KwovTqymwcSNO&ust=1771573761866000&source=images&cd=vfe&opi=89978449&ved=0CBUQjRxqFwoTCOijwduI5ZIDFQAAAAAdAAAAABAE
https://www.google.com/url?sa=i&url=https%3A%2F%2Fwww.facebook.com%2Fustad.vilayat.khan%2F&psig=AOvVaw3v6UDQ9MFU4HrZnqR5QxBq&ust=1771573950340000&source=images&cd=vfe&opi=89978449&ved=0CBUQjRxqFwoTCNi7lLKJ5ZIDFQAAAAAdAAAAABAU